सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-1 • 8 NOVEMBER TO 14 NOVEMBER 2019 • VOLUME-13 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • email:atul_editor@jalandharbreeze.com • www.jalandharbreeze.com

सफलता की कुंजी

कुछ लोग सफलता के सपने देखते हैं जबकि कुछ लोग जागते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं।

–महात्मा गांधी

अनमोल विचार

हर एक कठिनाई जिससे आप मुंह मोड़ लेते हैं, एक भूत बनकर आपकी नींद में बाधा डालेगी।

–रविन्द्रनाथ टैगोर

खतरे से भरा है सड़क पर सफर प्रतिदिन हो रही सड़क दुर्घटनायें

■ जालंधर/नीरज

मौसम बदल रहा है और धुंध भी बढ़ने लगी है कुछ मौसम के कारण और कुछ प्रदूषण के कारण और बढ़ती ट्रैफिक भी एक कारण है। परन्तु इसके प्रति न तो नगर प्रशासन और न पुलिस विभाग संवेदनशील दिखाई देता है। हां इतना तो अवश्य है कि हम सड़क सुरक्षा सप्ताह या इसी प्रकार के और समारोहों का आयोजन नहीं भूलते। लोगों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति सचेत तो करते है परन्तु पालन करना हमारे लिए कुछ मुश्किल है चूंकि इससे हमारे निजी हितों का हनन है। हमें स्कूटर पर सवार व्यक्ति के हैलमैंट का ध्यान अधिक रहता है परन्तु ओवर लोड भूसे और चारे वाली ट्राली नहीं दिखती किसी वृद्ध अथवा बालक या दिव्यांग को सड़क पार करवाने की चिन्ता से अधिक चिन्ता दूसरे राज्यों से आ रहे भारी वाहनों की चिन्ता होती है कि हमें उसके सही कागज पत्रों में भी कमी-वेशी दिखाकर उससे कुछ ना कुछ ऐंठना होता है।

हमें रात भर सड़क किनारे बिना किसी इंडीकेशन के खड़े ट्रक-ट्रालियां जो हादसों का कारण बनती है, वो क्यों नहीं दिखती ? और ओवर लोड ट्रक व गन्ने से भरी इधर-उधर झूलती ट्रालियां व ओवर स्पीड गड़ियां जो कंट्रोल से बाहर होकर सड़क डिवाईडरों के पार दूसरी ओर चल रहे वाहनों को भी दुर्घटना ग्रस्त करती है। दिन प्रति दिन धुंध के कारण विजिब्लटी के कारण रास्ता देख पाना मुश्किल हो जाता है नगर प्रशासन को जहां सड़क पर सेफटी संकेत लाईट्स इत्यादि की ओर ध्यान देना एवं वाहन चालन सीमा और समय पर ध्यान देना जरूरी है। वहीं ट्रैफिक पुलिस को ओवर लोडिंग और ओवर स्पीड पर नियंत्रण एवं जन सुविधा के लिए सड़क नियमों का सख्ती से पालन करवाने पर ध्यान देना जरूरी है ताकि सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सके पुलिस के रात्रि नाकों का तभी कुछ लाभ है जब दुर्घटनायें कम हो सरकारी खजाने से ज्यादा जरूरी है लोगों की जीवन सुरक्षा जिसके लिए सिर्फ पुलिस उत्तरदायी है।

दुर्घटना से कोई परिवार न उजड़े उसके लिए पुलिस विभाग को सदैव तत्पर रहना पड़ेगा ताकि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को प्राथमिका चिकित्सा समय पर उपलब्ध कराई जा सके।

आम आदमी की कब सुनेंगा रेलवे विभाग?

रेलवे की सभी सुविधाएं प्रीमियम ट्रेनों को

■ जालंधर/प्रभात सुरी

कब आएंगे आम आदमी के अच्छे दिन

गत दिनों सासाराम में रेलवे स्टेशन पर हुए उग्र प्रदर्शन को देखते हुए रेल मंत्री और रेलवे प्रशासन के उच्चाधिकारियों को चेत जाना चाहिए कि केवल सुविधाओं को बढ़ाकर नहीं अपितु मध्यम वर्गीय लोगों की अपेक्षा के अनुरूप ऐसी योजनाएं बनायें जिससे युवा के लिए रोजगार का सृजन हो और साधारण श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों को यात्रा खड़े हो कर नहीं बैठ कर करने की सुविधा तो प्राप्त हो तेजस जैसी गाड़ियां चलाकर एयर कन्डीशन कोच बढ़ाकर या स्टेशनों का सौंदर्यीकरण कर वे आम नागरिक (यात्री) को क्या लाभ पहुंचा रहा है। साधारण श्रेणी के शौचालयों की दुरदशा देखकर जीते जी नर्क की झलक मिल जाती है भीड़ का यह आलम कि कोई महिला किसी पुरूष को इसलिए बुरा भला नहीं कह सकती कि वह देख रही है कि वह भीड़ का बहाना कर अनुचित को उचित ठहरा सकता है क्या कोई साधारण श्रेणी में यात्रा करने वाला वरिष्ठ नागरिक अथवा बालक सुविधापूर्वक साधारण कोच में चढ़ सकता है। और अगर कोई महिला यात्री अपने छोटे बच्चों को लेकर या वरिष्ठ नागरिक भीड़ के कारण 2 मिनट की अवधि में रेल में न चढ़ पाने के कारण किसी अन्य आरक्षित श्रेणी में चढ़ जाये तो रेलवे के साधारण कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक किस प्रकार प्रताड़ित करते है और घूरते है जैसे उसने कोई अपराध कर दिया हो। अगर रेल प्रशासन सच में सुधार करना है तो साधारण यात्री के लिए सुविधायें देने की योजनाये बनायें।

प्राईवेट और सरकारी अस्पतालों में आम जनता के जीवन से हो रहे खिलवाड़ का कौन जिम्मेवार ?

■ जालंधर/विजय कुमार

गत दिनों डाक्टरों की वायरल वीडियो पर पत्रकारों द्वारा सिविल सर्जन कार्यालय द्वारा की गई कार्यवाही के संदर्भ में पूछे जाने पर सिविल सर्जन जालंधर द्वारा बड़ा ही आश्चर्यजनक और हास्यापद बयान दिया गया कि अगर इस बारे हमारे पास कोई शिकायत आयेगी तो हम कार्यवाही करेंगे। क्या एक सिविल सर्जन का कर्त्तव्य नहीं बनता कि वह इस संदर्भ में अपना निजी हित छोड़ कर इस मामले की पड़ताल करे और भविष्य में ऐसा न हो इसके लिए जालंधर जिले में स्थित सभी प्राईवेट और सरकारी अस्पतालों में हो रहे आम जनता के जीवन से खिलवाड़ की जांच करे कि किस जगह इस प्रकार की गलत टैस्ट रिपोर्ट बनाई जा रही है, वहां नार्मल को सीजेरियन बताकर गलत आप्रेशन किये जा रहे है और किस-किस ब्लड बैंकों में हेरा फेरी हो रही है। कौन जनता को डरा कर उन महंगे अस्पतालों में इलाज के लिए रैफर कर रहा है, जहां से अधिक कमीशन मिलता कौन से लैब डाक्टरों की मर्जी मुताबिक रिपोर्ट भेज रहे है कौन से एक कमरे में ही कई टैस्ट लैब चल रहे कौन-कौन से डाक्टरों द्वारा मन मुताबिक मैडीकल सर्टीफिकेट बनाये जाते है। उतना ही नहीं मानव जीवन को हानि पहुंचाने वाले खाद्य पदार्थों की जांच के अलावा होटलों, स्वीटस शाप में बिकने वाले खाद्य पदार्थों को बनाते समय अवश्यक सावधानियां नियमों का निर्माताओं द्वारा ध्यान रखा जा रहा है या नहीं स्कूलों में बच्चो को दिये जाने वाले, मिड-डे मील और अन्य दवाईयां इत्यादि एक्सपायरी तारीख या गलत ढंग से तो प्रयोग नहीं हो रही, कहां-कहां झोला छाप और बिना मैडीकल प्रैक्टीशनर प्रमाण के क्लीनिक चल रहे है। जिले में साफ सफाई ढंग से चल रही है अथवा प्रदूषण का शिकार तो नहीं हो रहे जिला निवासी, क्या बदलते मौसम और प्रदूषण के चलते बजुर्गों और बच्चों के स्वास्थ पर प्रभाव तो नहीं पड़ रहा। आपातकालीन स्थितियों के लिए कौन-कौन से अस्पतालों में बैठ सुरक्षित रखेंगे। क्या वरिष्ठ नागरिकों और स्वतंत्रता सेनानियों को सरकार द्वारा दी गई सुविधायें उन्हें समय पर उपलब्ध करवाई जा रही है ? क्या भारत सरकार द्वारा दी गई एयरकडनीशर रूम और कारें इसलिए दी गई है की स्वास्थ्य सुरक्षा अथवा स्वच्छता अभियान समारोहों के आयोजन पर लाखों रूपये के खर्चे करो उद्घाटन करो और आकर ए. सी. रूम में लगी घुमने वाली कुर्सी पीठ टिका नींद की झपकी लो। सिविल सर्जन के तो उतने कार्य है कि उसे तो रात में भी नींद नहीं आ सकती परन्तु जालंधर में तो कुंभकर्ण की नींद सो रहे है नगर स्वास्थ सुरक्षा चिकित्सक कहते है प्यास लगेगी तो कुआं खोदेंगे।

क्या एक सिविल सर्जन का कर्त्तव्य नहीं बनता कि अपना निजी हित छोड़ कर अस्पतालों में मरीजों से हो रही धक्केशाही को रोके ?

महाराष्ट्र में दिखा ऑपरेशन कमल का खौफ, शिवसेना ने अपने विधायकों को होटल में किया शिफ्ट

■ महाराष्ट्र/न्यूज नेटवर्क

शिवसेना को अपने विधायकों के टूटने का डर भी बना हुआ है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक शिवसेना अपने विधायकों को टूट से बचाने के लिए होटल ले जा रही है। खबरों के अनुसार शिवसेना अपने विधायकों को रंगशारदा होटल लेकर जा रही है।

महाराष्ट्र में सियासी संकट लगातार जारी है। मातश्रो में शिवसेना विधायक दल की बैठक खत्म हो गई है। शिवसेना अभी भी अपने मुख्यमंत्री पद के दावे पर कायम है। वहीं शिवसेना विधायकों ने कहा कि जो फैसला उद्धव ठाकरे करेंगे वो मंजूर होगा। विधायकों के साथ बैठक के बाद उद्धव ठाकरे ने कहा कि हमने कुछ ज्यादा नहीं मांगा है। जो पहले तय हुआ था, हमें वह चाहिए।

बीजेपी नेताओं से मेरी कोई भी सीधी बात नहीं हुई है। हमारे पास सभी विकल्प हैं, लेकिन हम नहीं चाहते हैं कि उन पर हम विचार करें।

लेकिन इन सब के बीच शिवसेना को अपने विधायकों के टूटने का डर भी बना हुआ है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक शिवसेना अपने विधायकों को टूट से बचाने के लिए होटल ले जा रही है। खबरों के अनुसार शिवसेना अपने विधायकों को रंगशारदा होटल लेकर जा रही है।

पाक सेना ने इमरान के फैसले को बदला, कहा- करतारपुर के लिए पासपोर्ट साथ लाना होगा

■ इस्लामाबाद/न्यूज नेटवर्क

पाकिस्तानी सेना ने कहा है कि करतापुर गलियारे के रास्ते करतारपुर साहिब आने वाले भारतीय सिख श्रद्धालुओं को अपने साथ पासपोर्ट लाना होगा। बृहस्पतिवार को मीडिया में आई एक खबर में यह कहा गया है। इससे कुछ ही दिन पहले प्रधानमंत्री इमरान खान ने घोषणा की थी कि भारतीय श्रद्धालुओं को पवित्र गुरुद्वारा दरबार साहिब आने के लिए महज एक वैध पहचान-पत्र की जरूरत होगी। पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता मेजर जनरल आसिफ गफूर की इस टिप्पणी से एक दिन पहले ही भारत ने पाकिस्तान से यह स्पष्ट करने को कहा था कि करतारपुर स्थित गलियारा जाने के लिए सिख श्रद्धालुओं को पासपोर्ट की जरूरत होगी या नहीं।

प्रधानमंत्री इमरान खान, भारतीय सिख श्रद्धालुओं को गुरुद्वारा दरबार साहिब तक बिना वीजा पहुंच देने वाले करतारपुर गलियारे का उद्घाटन शनिवार को करेंगे। यह गलियारा सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव की 550वीं जयंती के उपलक्ष्य में इस हफ्ते खोला जा रहा है।

डॉन न्यूज ने 'हम' समाचार चैनल के हवाले से बताया कि मेजर जनरल गफूर ने बुधवार को कहा कि भारतीय सिख श्रद्धालुओं को करतारपुर गलियारे का प्रयोग करने के लिए पासपोर्ट दिखाना जरूरी होगा। गफूर ने कहा कि सुरक्षा कारणों से, प्रवेश पासपोर्ट आधारित पहचान पर मिली अनुमति के तहत कानूनी तरीके से दिया जाएगा। सुरक्षा एवं संप्रभुता से किसी तरह का समझौता नहीं किया जाएगा।

बुधवार को, भारत ने पाकिस्तान से यह साफ करने को कहा था कि करतारपुर साहिब जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत होगी या नहीं। एक नवंबर को, प्रधानमंत्री खान ने करतापुर गलियारे का निर्माण पूरा होने की ट्विटर पर घोषणा करते हुए कहा था कि उन्होंने दो शर्तों को माफ कर दिया है। इनमें से एक पासपोर्ट से जुड़ी शर्त थी जबकि दूसरी शर्त भारत से करतारपुर तीर्थयात्रा पर आने वाले सिखों द्वारा 10 दिन पहले पंजीकरण कराने से जुड़ी थी। उन्होंने कहा था कि भारत के सिख श्रद्धालुओं को करतारपुर आने के लिए पासपोर्ट की नहीं बल्कि एक वैध पहचान-पत्र की जरूरत होगी।

इसके अलावा उद्घाटन समारोह के लिए आने वाले और 12 नवंबर को सिख गुरु की 550वीं जयंती के मौके पर आने वाले श्रद्धालुओं से 20 डॉलर का सेवा शुल्क भी नहीं वसूला जाएगा। करतारपुर गलियारा भारत के पंजाब स्थित डेरा बाबा नानक को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के नारोवाल जिले में स्थित करतारपुर के दरबार साहिब से जोड़ेगा। यह गुरुद्वारा अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

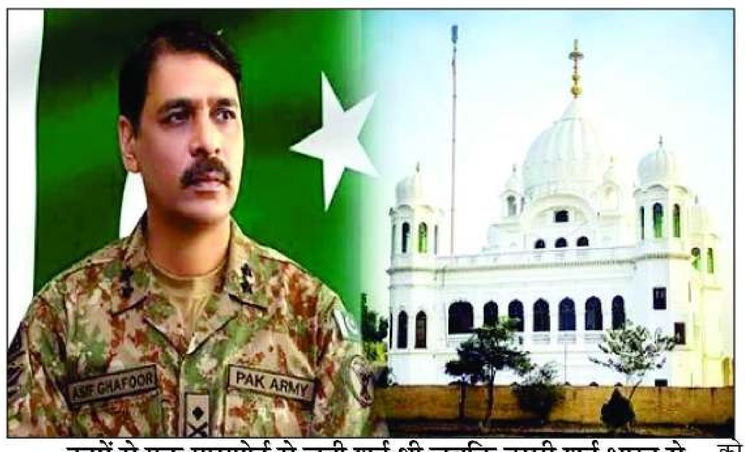

इनमें से एक पासपोर्ट से जुड़ी शर्त थी जबकि दूसरी शर्त भारत से करतारपुर तीर्थयात्रा पर आने वाले सिखों द्वारा 10 दिन पहले पंजीकरण कराने से जुड़ी थी। उन्होंने कहा था कि भारत के सिख श्रद्धालुओं को करतारपुर आने के लिए पासपोर्ट की नहीं बल्कि एक वैध पहचान-पत्र की जरूरत होगी।

चौथे दिन कामकाज से दूर रहे वकील, मुकदमा लड़ने वालों को दिये फूल

■ नई दिल्ली /न्यूज नेटवर्क

साकेत जिला अदालत परिसर के प्रवेश द्वार पर बृहस्पतिवार को वकीलों ने मुकदमा लड़ने वाले लोगों का फूल देकर स्वागत किया और खुद लगातार चौथे दिन काम से अलग रहे। तीस हजारी अदालत में दो नवंबर को पुलिस के साथ झड़प के विरोध में वकील प्रदर्शन कर रहे हैं। सभी छह जिला अदालतों तीस हजारी, साकेत, कड़कड़डूमा, रोहिणी, पटियाला हाउस और द्वारका में शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। हालांकि आज वादियों और पुलिस को अदालत परिसर के अंदर आने दिया जा रहा है। ऑल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट बार एसोसिएशन की समन्वय समिति के महासचिव अधिवक्ता डी एस कसाना ने बताया कि साकेत अदालत में वकीलों और आम लोगों के बीच टकराव के बाद वादियों को अपने अपने मामलों की सुनवाई संबंध में अदालत कक्ष में जाने दिया जा रहा है और मामलों में तिथि लेने के लिये वकीलों की जगह कोई और व्यक्ति उपस्थित हो रहे हैं। उन्होंने कहा, ''हमने वकीलों और मुवक्किलों समेत करीब 1,000 लोगों के लिये भोजन की भी व्यवस्था की है। हमलोग शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे हैं। बार के निजी सुरक्षा गार्ड आज सुरक्षा का जिम्मा संभाल रहे हैं।''

उक्ति

समय किसी के साथ पक्षपात नहीं करता है। जो व्यक्ति इसके एक-एक क्षण का सदुपयोग करता है, यह उसी का साथ देता है। दुरुपयोग करने वालों का साथ समय नहीं देता।

■ माओत्से तुंग

www.jalandharbreeze.com

साप्ताहिक

• साप्ताहिक 8 नवंबर से 14 नवंबर 2019

जालंधर ब्रीज

दखल

शहरों का घुटता जा रहा दम

आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों को अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्ति भी देता था।

राजधानी दिल्ली की हवा में घुले जहर ने एक बार फिर लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। राजधानियों की हवा में जहर की बात आमतौर पर मुहावरे में की जाती है, लेकिन दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों, शहरों में रहने वाले लोग सचमुच दमघोंटू हवा में सांस लेने को विवश हैं। सड़क पर बेतहाशा दौड़ रहे वाहनों और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के इलाके के खेतों में जलाई जाने वाली पराली के धुएं ने सांस लेना दूभर कर दिया है। रही-सही कसर दीपावली पर हुई आतिशबाजी के धुम-धड़ाके ने पूरी कर दी। दिल्ली ही क्या, देश के अधिकांश शहरों की हवा में प्रदूषण की मात्रा दीवाली के दिनों में खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है। उदाहरण के लिए राजस्थान के कोटा शहर को लिया जा सकता है। हर साल करीब दो लाख बच्चे देश के शीर्षस्थ इंजीनियरिंग या फिर मेडिकल कॉलेजों में दाखिले की परीक्षा के लिए कोचिंग लेने के लिए कोटा आते हैं और इन छात्रों की आमद ने कोटा को आर्थिक समृद्धि के नवसोपान सौंपे हैं। यों भी बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है और जिस इलाके में इतनी बड़ी संख्या में बच्चे रहते हों, उस इलाके के पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामान्य जन को अतिरिक्त रूप से संवेदनशील होना चाहिए। शहर के एक अस्थमा विशेषज्ञ ने दीवाली की रात कोटा की हवा में प्रदूषण की पड़ताल की तो पाया कि वहां की हवा में जहरीले कणों की मात्रा मानक स्तर से सात गुना अधिक है।

पिछले कुछ सालों में हम अपने स्वभाव से ही नहीं, व्यवहार से भी हवा में जहर घोलने के आदी हो चुके हैं। वायु प्रदूषण की भयावहता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूटीओ वायु प्रदूषण को 'पब्लिक हेल्थ इमरजंसी' अर्थात जन स्वास्थ्य के लिए आपातकाल कहता है। डब्ल्यूटीओ की एक रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण हर साल दुनिया में करीब सात करोड़ लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। बर्मिंघम विश्वविद्यालय ने अपने एक शोध के दौरान दुनिया में निमोनिया के कारण होने वाली मौतों और वायु प्रदूषण के मध्य सीधा संबंध पाया। लंदन के किंग्स कॉलेज के एक अध्ययन में पाया गया कि वायु प्रदूषण युवाओं में कई मनोविकृतियों को जन्म देता है। सामान्य तौर पर माना जाता है कि वायु प्रदूषण के कारण मनुष्य के फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है, लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया है कि वायु प्रदूषण शरीर के हर अंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जहरीली हवाओं का असर फेफड़ों में समा कर समस्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है। वायु प्रदूषण के कारण व्यक्ति में तनाव पैदा करने वाले हार्मोनों का स्तर बढ़ जाता है और वह अवसाद का शिकार तक हो सकता है। बुजुर्गों में समझने की क्षमता में गिरावट संबंधी डिमेंशिया रोग हो जाता है।

गर्भवती महिलाओं को गर्भपात जैसी समस्याओं का सामना करना होता है, गर्भस्थ शिशु का जन्म समय से पूर्व ही हो जाता है-जिससे उसका शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है। ब्रोंकाइटिस, अनिद्रा, यकृत के कैंसर, प्रजनन क्षमता में कमी, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग जैसे कितने ही रोग वायु प्रदूषण के कारण बढ़ रहे हैं। चीन में किए गए एक अध्ययन में तो यह भी पाया गया कि वायु प्रदूषण बच्चों को गणित और भाषा जैसे विषय सीखने पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। वस्तुतः वायु प्रदूषण अपनी चपेट में आने वाले व्यक्ति के जीवन से इस तरह खिलवाड़ करता है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से पीढ़ियां प्रभावित होती हैं। शायद यही कारण है कि हमारे पुरखों ने अपने पर्यावरण के संरक्षण को एक जरूरी मुद्दा माना और वेदों ने लगातार प्रतीकों में पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। ऋग्वेद में एक स्थान पर 'पृथ्वीः पूः च उर्वी भव' कह कर आह्वान किया गया है कि समस्त पृथ्वी और संपूर्ण परिवेश शुद्ध रहे, तभी जीवन का समग्र विकास हो सकेगा। अथर्ववेद में वायु को प्राण कहा गया है। वेदों के अनुसार वायु पिता के समान पालक, बंधु के समान धारक, पोषक और मित्रवत सुख देने वाली है। कहा तो यह भी गया है कि वायु अमरत्व की निधि है, क्योंकि वह हमें जीवन देती है। लेकिन बदलती हुई जीवन शैली ने हमारी पारंपरिक मान्यताओं से खिलवाड़ किया और मानो प्रदूषण ही हमारे लिए तरक्की का पर्याय बन गया।

इस वर्ष भी जब कुछ संवेदनशील लोगों ने वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए दीवाली के पूर्व पटाखों के संयमित उपयोग की बात की, तो कतिपय लोग तरह-तरह के कुतर्क से आतिशबाजी के समर्थन में उतर आए। कुछ लोगों का तो यहां तक कहना था कि दीवाली पर जो आतिशबाजी प्रारंभ से हो रही है, उसके खिलाफ बोलना वस्तुतः एक सुनियोजित साजिश है। ऐसा कुतर्क देने वाले इस ऐतिहासिक तथ्य को भी बिसरा बैठे कि जिन रामचंद्र की अयोध्या वापसी का संदर्भ दीपावली से जोड़ा जाता है, उनका समय ईसा से करीब साढ़े पांच हजार साल पहले का आंका गया है, जबकि आतिशबाजी की शुरुआत तो सदियों बाद हुई। कुछ लोगों ने इस बार यह भी तर्क दिया कि पटाखे से होने वाले धुएं से वातावरण में मौजूद मच्छर मरते हैं, इसलिए पटाखे तो जी भर कर चलाए जाने चाहिए। ऐसा कहने वाले भूल गए कि वातावरण को जहरीला कर देने से केवल मच्छरों पर ही प्रभाव नहीं पड़ता, पीढ़ियां भी प्रतिकूलताओं का सामना करती हैं।

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से-कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन डाईआक्साइड जैसी गैसें और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। सर्दी के दिनों में वातावरण की आर्द्रता के कारण जहरीले कण जमीन से कुछ ऊपर ही एक ऐसा आवरण बना लेते हैं कि हवा बहुत बोझिल हो जाती है। दीवाली के दिनों में चूंकि आतिशबाजी के कारण हवा में नुकसानदायक कहे जाने वाले कणों की मात्रा बहुत बढ़ जाती है और वही समय ऋतु परिवर्तन का भी होता है, इसलिए लोगों को ज्यादा परेशानी होती है। आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। तब सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या काफी कम थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों को अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्ति भी देता था।

अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में भारत में पर्यावरण के बुरे प्रभावों का अध्ययन किया तो चौंकाने वाला तथ्य यह सामने आया कि गंगा के मैदानी इलाकों में रहने वालों की औसत उम्र में वायु प्रदूषण के कारण साढ़े तीन से लेकर सात वर्ष तक की कमी हो रही है। स्थिति यह है कि 1998 से 2016 के बीच इस इलाके में प्रदूषण 70 फीसद से भी अधिक बढ़ गया है, जबकि देश की 40 फीसद आबादी भी इसी इलाके में रहती है। ऐसे में आने वाले समय में वायु प्रदूषण के कारण पनपने वाली बीमारियों से ग्रसित लोगों की संख्या में कितनी वृद्धि होगी, अनुमान लगाया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन वायु प्रदूषण को 'पब्लिक हेल्थ इमरजंसी' यों ही नहीं कहता।

■ अतुल कनक
(वरिष्ठ पत्रकार)

विचार

आखिर किसलिए नाराज है पुलिस

दिल्ली पुलिस के पुलिसकर्मी मंगलवार को सुरक्षा की मांग को लेकर प्रदर्शन पर थे। भीड़ से सुरक्षा की मांग के लिए सिर्फ दिल्ली ही नहीं देश भर में कई जगहों पर पहले भी प्रदर्शन हो चुके हैं। संसाधनों की कमी पुलिस विभाग की बड़ी परेशानी है।

दिल्ली की तीस हजारी कोर्ट के बाहर दो नवंबर को पुलिस और वकीलों के बीच जो हिंसक झड़प का मुद्दा और भी गरमा गया है। हालांकि, पुलिस मुख्यालय के सामने से पुलिसकर्मियों का धरना खत्म हो गया, मगर यह घटनाक्रम अपने पीछे ढेरों सवाल छोड़ गया। वकीलों के साथ हुई झड़प के बाद पुलिसकर्मी सड़क ब्लॉक करके मुख्यालय के बाहर प्रदर्शन करने में जुट गए। करीब 10 घंटे तक पूरा घटनाक्रम चला। इस दौरान राजधानी दिल्ली में एक अलग ही नजारा देखने को मिला। हजारों की संख्या में पुलिसकर्मी वर्दी में अपनी सुरक्षा की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। यूनिफॉर्म में पुलिस हेडक्वॉर्टर के सामने प्रदर्शन कर रहे पुलिसकर्मियों के नारे व हाथों में प्लेकार्ड उनकी विवशता को बयान कर रहे थे। वर्दी में इंसान और हम पंचिंग बैग नहीं हैं जैसे पोस्टर के साथ पुलिसकर्मी सरकार से अपनी सुरक्षा के लिए गुहार लगा रहे थे। दिल्ली पुलिस गृह मंत्रालय के नियंत्रण में आती है। दिल्ली में तीस हजारी कोर्ट में पुलिसकर्मी पर वकीलों ने हमला कर दिया था। हालांकि, दिल्ली से शुरू हुआ प्रदर्शन देश के दूसरे हिस्सों तक भी चला गया।

पुलिसकर्मियों पर हमला कोई पहली बार नहीं हुआ है और ऐसे हमले कानून और नियमों को लेकर सम्मान नहीं होने के संकेत के तौर पर देखे जाते हैं। भारत में पुलिस फोर्स पर हमले का सबसे बड़ा खतरा बड़ी अनियंत्रित भीड़ होती है। पुलिसकर्मियों पर हमले का सबसे अधिक डर विभाग में सबसे निचले स्तर पर काम करने वालों पर होता है। इस वक्त देश में पुलिस विभाग में पर्याप्त संख्या बल की बहुत कमी है। देश में 25 लाख पुलिसकर्मियों की जरूरत है, लेकिन सिर्फ 19.41 लाख ही मौजूदा वक्त में कार्यरत है। इस आंकड़े के अनुसार प्रत्येक एक लाख नागरिकों पर सिर्फ 151 पुलिसकर्मी ही मौजूद हैं। संयुक्त राष्ट्र ने प्रति एक लाख नागरिकों पर 222 पुलिसकर्मियों की तैनाती का सुझाव दिया है। इस आधार पर पुलिसकर्मियों पर काफी दबाव है और विश्व में नागरिक-पुलिसकर्मी संख्या अनुपात के लिहाज से भारत की स्थित काफी बुरी है। पुलिस विभाग में पर्याप्त संख्या बल नहीं होने का असर यह है कि पुलिसकर्मी जहां अतिरिक्त दबाव से जूझ रहे हैं। पर्याप्त संसाधन भी नहीं है।

संसाधनों के अभाव और अतिरिक्त दबाव का असर है कि पुलिस विभाग खुद ही लाचार है और इसका असर पुलिस की पूरी कार्यप्रणाली और जांच पर भी पड़ता है। अगर सिर्फ संख्याबल की बात की जाए तो बार काउंसिल ऑफ इंडिया के आंकड़ों के अनुसार, देश में करीब 20 लाख वकील हैं जबकि पुलिसकर्मियों की संख्या 19.4 लाख है। पुलिस विभाग में राजनीतिक दखल भी आम समस्या है। आम तौर पर पुलिस विभाग पर राज्य का नियंत्रण होता है, हालांकि दिल्ली पुलिस केंद्रीय गृह मंत्रालय के नियंत्रण में आती है। पुलिस विभाग में सुधार के लिए कई कमिटियों ने अनगिनत सिफारिशें की हैं, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में ऐसा संभव नहीं हुआ है।

आखिर क्यों नहीं चाहते बेटियां

जिस समाज में बेटियों को दुनिया में आने का हक न मिले, वहां उनके दूसरे मानवीय अधिकारों की बात करना बेमानी है। अफसोस कि बेटे-बेटी के फर्क की बदौलत उपजी मानसिकता की मौजूदगी आज भी भारतीय समाज की कटु सच्चाई बनी हुई है। तभी तो लिंग परीक्षण व भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियां न केवल अपनी जड़ें जमाए हुए हैं, बल्कि देश में बने सख्त कानूनों के चलते इन्हें अंजाम देने के लिए नए रास्ते भी खोजे जा रहे हैं। हाल में राजधानी दिल्ली में पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा एक कॉल सेंटर पर छापा मारने पर ऐसा ही दुखद और हैरान करने वाला सच सामने आया है। इस कॉल सेंटर में आइवीएफ के जरिए महिलाओं को शत-प्रतिशत बेटा पैदा करने की गारंटी दी जाती थी। मोटी रकम वसूल कर बच्चे के लिंग की जांच का इंतजाम किया जाता था।

गौरतलब है कि हमारे देश में लिंग परीक्षण के लिए कड़े कानून बने हुए हैं। ऐसे में इस अमानवीय गोरखधंधे से जुड़े लोगों ने महिलाओं को विदेश भेज कर लिंग परीक्षण करवाने तक का रास्ता निकाल लिया है। महिलाओं को उन देशों में भेजा जाता था, जहां गर्भ में पल रहे बच्चे का लिंग परीक्षण करवाना गैर-कानूनी नहीं है। जांच में सामने आया कि इस आइवीएफ सेंटर के माध्यम से महिलाओं को मनचाही संतान पाने के लिए दुबई, सिंगापुर और थाईलैंड जैसे देशों में भेजा जाता था। राष्ट्रीय स्तर पर जाल फैलाए इस गिरोह का देश भर में करीब सौ आइवीएफ केंद्रों के साथ जुड़ाव था। कहने को प्रगतिशील व बदलाव की राह पर आगे बढ़ रहे हमारे समाज में परंपराओं और रूढ़ियों की जकड़न देखिए कि इस कॉल सेंटर के माध्यम से परीक्षण के लिए अभी तक करीब छह लाख लोगों को विदेशों में भेजा जा चुका है। ऐसे हालात तब हैं जब लिंगानुपात राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बना हुआ है।

दरअसल, बेटियों की सहज स्वीकार्यता न होने की यह स्थिति इस हकीकत को पुख्ता करती है कि हमारे समाज में विचार और व्यवहार के स्तर पर दोहरे मानक बने हुए हैं। कथनी और करनी का यह अंतर बेटियों के जीवन का दुश्मन बन गया है। नतीजतन, पितृसत्तात्मक सोच वाले हमारे सामाजिक ढांचे में बहुत कुछ बदल कर भी कुछ न बदलने की स्थितियां बनी हैं। कुछ समय पहले आई यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के मुताबिक सुनियोजित लिंगभेद के कारण भारत की आबादी से करीब पांच करोड़ लड़कियां और महिलाएं गायब हैं। अफसोस कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के नारे तो लगते हैं, पर कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियां भी जड़ें जमाए हुए हैं। तभी तो बेटे पैदा करने की चाह में लोग एजेंटों को मोटी रकम चुका कर विदेश तक जा रहे हैं। राष्ट्रीय औसत के अनुसार देश में प्रति एक हजार लड़कों के पीछे 943 लड़कियां हैं। कई प्रांतों में यह औसत काफी कम है।

घर से लेकर समाज के माहौल तक, आज भी बेटियों के जन्म को लेकर न तो सकारात्मकता दिखती है और न ही स्वीकार्यता। कभी भ्रूण हत्या तो कभी बेटियों को कूड़े में छोड़ देने की असंवेदनशील और अमानवीय घटनाएं भी जब-तब सामने आती रहती हैं। सामुदायिक स्तर पर बेटियों के प्रति भेदभाव और असंवेदनशील माहौल के चलते ही मां-बाप को लड़कियां भार लगने लगती हैं।

बीते साल आई नीति आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक देश के 21 राज्यों में से 17 राज्यों में लिंगानुपात का आंकड़ा असंतुलित है। इस रिपोर्ट के मुताबिक इन 17 प्रांतों में लिंग अनुपात दस अंक गिरा है। 'स्वस्थ राज्य, प्रगतिशील भारत' की रिपोर्ट वर्ष 2015-16 के अनुसार गुजरात राज्य के अलावा हरियाणा में भी लिंगानुपात में भारी गिरावट आई है। गौरतलब है कि नीति आयोग भी असंतुलित होते लिंगानुपात पर चिंता जताते हुए कह चुका है कि लिंगानुपात में सुधार लाने के लिए लोगों को बेटियों के महत्व को समझना होगा और जागरूकता लानी होगी। चिंतनीय है कि बेटियों को गर्भ में मार डालने का कृत्य आपराधिक मामला भर नहीं है। यह पूरे समाज का ताना-बाना बिगाड़ने वाली सोच है। लिंगानुपात का असंतुलन कई मोर्चों पर चिंता का विषय बन रहा है। कई प्रदेशों में बेटों के लिए दुल्हन नहीं मिल रही है। दूसरे राज्यों से दुल्हन लाकर बेटों का घर बसाया जा रहा है। इतना ही नहीं, बेटे और बेटी में किए जाने वाले भेदभाव की मानसिकता के चलते आज भी दूर-दराज के गांवों में तो बेटियों की शिक्षा और स्वास्थ्य को कोई महत्व नहीं दिया जाता। समग्र रूप से देखा जाए तो हमारे समाज में कुपोषित बच्चियों का प्रतिशत काफी ज्यादा है। हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत के बल पर पहचान बना कर आगे बढ़ती बेटियां आज भी अपने अस्तित्व के लिए जूझती नजर आ रही हैं। मोर्चे पर खुद को साबित करने के बावजूद बेटियों की यह जंग उनके जन्म लेने से पहले ही शुरू हो जाती है।

देश का सबसे बड़ा जनसांख्यिकीय सर्वेक्षण बताता है कि आज भी समाज में बेटियां, जन्म लेने से लेकर परवरिश पाने तक हर तरह के भेदभाव की शिकार हैं। यह दुखद ही है कि साक्षरता के बढ़ते आंकड़े, तकनीक की पहुंच और बदलते सामाजिक और पारिवारिक परिवेश में भी बेटियों को लेकर सोच जस की तस बनी हुई है। कुछ समय पहले भारत के महापंजीयक की ओर से करवाए गए वार्षिक सर्वे (एसआरएस) में यह बात सामने आई थी कि बालिका भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक विकृति देश के सबसे समृद्ध और शिक्षित राज्यों में भी मौजूद है। इसका अर्थ यह है कि लोगों की मानसिकता में बदलाव आना जरूरी है। भ्रूण हत्या और लिंगभेद के खिलाफ तमाम सरकारी अभियानों और सामाजिक जागृति लाने के प्रयासों के बावजूद लिंगानुपात में भारी गिरावट आ रही है, क्योंकि देश में बने कानूनों का तोड़ निकाल कर लिंग परीक्षण के नए मार्ग तलाश लिए गए हैं।

संगठित गिरोह की तरह काम करने वाले ऐसे एजेंट मोटी कमाई करने के लिए बेटियों के जन्म को बाधित करने की सोच रखने वाले परिवारों की राह आसान बना रहे हैं। आखिर क्यों बेटियों के स्वागत और सम्मान का माहौल आज भी केवल उम्मीद भर है? घर-परिवार से लेकर समाज के माहौल तक, आज भी बेटियों के जन्म को लेकर न तो सकारात्मकता दिखती है और न ही स्वीकार्यता। कभी भ्रूण हत्या तो कभी बेटियों को कूड़े के ढेर में छोड़ देने की असंवेदनशील व अमानवीय घटनाएं भी जब-तब सामने आती रहती हैं। सवाल है, आखिर ऐसा क्यों है कि खेलों से लेकर अंतरिक्ष तक प्रभावी दखल रखने और कीर्तिमान बनाने वाली बेटियों के लिए दुनिया में आने से पहले ही संघर्ष का सफर शुरू हो जाता है? बेटी का जन्म क्यों परिवारजनों के माथे पर शिकन ले आता है? अफसोस इस बात का है कि गांवों-कस्बों में ही नहीं, पढ़े-लिखे शहरी परिवारों को भी बिटिया की चाह नहीं है। यही वजह है कि इसका हल सरकारी अभियान और कानूनी सख्ती से ज्यादा सामाजिक सोच में संवेदनशीलता आने से निकल पाएगा। साथ ही, लिंग अनुपात दुरुस्त करने सामाजिक परिवेश को सुरक्षित और महिलाओं के लिए सम्माननीय भी बनाना होगा। बेटे की चाहत ही नहीं दहेज, बढ़ते महिला अपराध, लैंगिक असमानता और सामाजिक भेदभाव ऐसे बड़े कारण हैं जो बेटियों की स्वीकार्यता में बाधक बनते हैं। बेटियों के साथ जन्म से पहले ही दोयम दर्जे का व्यवहार न हो इसके लिए लोगों की भावनाओं का बदलना आवश्यक है और भावनात्मक संवेदनशीलता लड़कियों के प्रति समाज का नजरिया बदलने में सकारात्मक और सहयोगी साबित होगी।

■ डॉ. मोनिका शर्मा
(वरिष्ठ पत्रकार)

ट्विटर

पुलिस का सड़कों पर प्रदर्शन करना भारत के लिए स्वतंत्रता के 72 वर्षों में एक नई गिरावट है। क्या यह है भाजपा का नया भारत। आज देश कहां जा रहा है।

रणदीप सुरजेवाला, कांग्रेस प्रवक्ता

पुलिस राजनीतिक इकाई में तब्दील हो गई है और यह भाजपा की सशस्त्र शाखा की तरह काम कर रही है जबकि इसका काम कानून व्यवस्था बनाए रखने का है।

सौरभ भारद्वाज, आप प्रवक्ता

सत्यार्थ

हो ची मिन्ह की कहानी

एक बार एक लड़का परीक्षा में फेल हो गया। इस कारण साथियों ने उसका जमकर मजाक उड़ाया। वह यह सब बर्दाश्त नहीं कर पाया और भारी तनाव से ग्रस्त हो गया। उसके माता-पिता ने उसे निरंतर समझाया कि बेटा, फेल होना कोई इतनी बड़ी असफलता नहीं होती कि तुम इतने परेशान हो जाओ कि अपने आगे के जीवन पर भी प्रश्नचिन्ह लगा बैठो। जब तक इंसान अच्छे-बुरे, सफलता-असफलता के दौर से खुद नहीं गुजरता है, तब तक वह बड़े काम नहीं कर सकता, लेकिन उसे उनकी बातों से कोई संतुष्टि नहीं मिली। अशांति व निराशा में जब उसे कुछ नहीं सूझा, तो वह रात में आत्महत्या करने लिए चल दिया। रास्ते में उसे एक बौद्ध मठ दिखाई दिया। वहां से धीमी सी आवाजें आ रही थीं। वह उत्सुकता से मठ के अंदर भी चला गया। वहां एक भिक्षुक कह रहा था-पानी मैला क्यों नहीं होता? क्योंकि वह बहता है। उसके मार्ग में बाधाएं क्यों नहीं आतीं? क्योंकि वह बहता रहता है। पानी का एक बिंदु झरने से नदी, नदी से महानदी और फिर अंत में समुद्र क्यों बन जाता है? क्योंकि वह बहता है। इसलिए मेरे जीवन तुम रुको मत, बहते रहो। कुछ असफलताएं आती ही हैं, मगर तुम उनसे घबराओ मत। उन्हें लांघकर मेहनत करते चलो। बहना और चलना ही जीवन है। असफलता से घबराकर रुक जाओगे, तो वैसे ही सड़ जाओगे, जैसे रुका हुआ पानी सड़ जाता है। यह सुनकर लड़के ने संकल्प लिया कि उसे भी बहते हुए पानी की तरह बनना है। इसी सोच के साथ वह घर आ गया। अगले ही दिन वह सामान्य होकर स्कूल गया और पूरी लगन एवं मेहनत के साथ पढ़ाई पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। आगे चलकर यही लड़का वियतनाम के राष्ट्रनायक हो ची मिन्ह के नाम से जाना गया।

भारत में सबसे खूबसूरत राजस्थान की संस्कृति

राजस्थान, भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है। यहां की संस्कृति दुनिया भर में मशहूर है। राजस्थान की संस्कृति में विभिन्न समुदायों और शासकों का योगदान है। आज भी जब कभी राजस्थान का नाम लिया जाए तो हमारी आखों के आगे थार रेगिस्तान, ऊंट की सवारी, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान आते हैं। अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमाननवाजी के लिए जाना जाता है ये राज्य। चाहे स्वदेशी हो या विदेशी, यहां की संस्कृति तो किसी का भी मन चुटकियों में मोह लेगी। आखिर किसका मन नहीं करेगा, रात के वक्त रेगिस्तान में आग जलाकर कालबेलिया नृत्य देखने का। जिन्होंने राजस्थान की संस्कृति का अनुभव किया है वो बहुत खुश नसीब हैं, लेकिन जो इससे अंजान हैं उन्हें हम बताएंगे इस शाही शहर की सरल लेकिन आकर्षक संस्कृति के बारे में कुछ ऐसी दिलचस्प बातें जिन्हें जानने के बाद आप यहां जाने के लिए खुद को रोक नहीं पाएंगे।

राजस्थान आने वाले पर्यटक के लिए आकर्षण का केंद्र है *सांभर झील*

राजस्थान, एक बेहद ही सभ्य और खूबसूरत राज्य है। अपनी मेहमान नवाजी के लिए पहजाना जाने वाला ये राज्य सबको पधारो म्हारे देश के नारे के साथ अपनी खूबसूरती दिखाने का न्यौता देता है। आदर-सत्कार व परंपराएं मानने वाले राजस्थान देखने दुनिया भर के पर्यटक आते हैं। यूं तो राजस्थान का नाम सुनते ही अक्सर हमारे मन में एक बियाबान रेगिस्तान जहां सिर्फ चिलचिलाती धूप और ऊंट पर बैठे कुछ लोगों की छवि बनती है, लेकिन हकीकत में राजस्थान में और भी बहुत कुछ है, जो एक बार आखों में बसने के बाद कभी ओझल नहीं होगा। राजस्थान की खूबसूरती अतुल्य है, इसका कोई मेल नही। हां, यहां रेगिस्तान है, लेकिन, यहां झीलों का शहर उदयपुर भी है जो अपनी खूबसूरती किसी के द्वारा बताए जाने का मोहताज नहीं। इसके अलावा यहां पिंक सिटी जयपुर भी अपनी सुंदरता बयान करता है। तो वहीं जयपुर के पास ही सांभर नाम की एक झील है।

सांभर झील की विशेषताएं

सांभर झील समुद्र तल से 1,200 फुट की ऊंचाई पर है। भरे रहने पर इसका क्षेत्रफल 90 वर्ग मील में फैला रहता है। सांभर झील में तीन नदियां आकर गिरती हैं। इस झील की दिलचस्प बात ये है कि इससे बड़े पैमाने पर नमक का उत्पादन किया जाता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस नमक का स्रोत, अरावली के शिष्ट और नाइस के गर्तों में भरा हुआ गाद है। इस गाद में घुलने वाला सोडियम बारिश के पानी में घुलकर नदियों के रास्ते झील में आता है और नमक के रूप में रह जाता है।

सांभर झील की पौराणिक मान्यताएं

महाभारत के अनुसार सांभर झील वला क्षेत्र असुर राज वृषपर्वा के साम्राज्य का एक हिस्सा था और यहां असुरों के कुलगुरु शुक्राचार्य रहते थे। इसी जगह पर शुक्राचार्य की बेटी देवयानी का विवाह नरेश ययाति के साथ हुआ था। झील के पास ही एक मंदिर भी है, जो देवयानी को समर्पित है। एक हिंदू मान्यता के मुताबिक, चौहान राजपूतों की रक्षक शाकंभरी देवी ने यहां के एक वन को कीमती धातुओं के मैदान में बदल दिया था। लोग इस प्रॉपर्टी को लेकर होने वाले झगड़ों से परेशान हो गए और सांभर झील को एक वरदान की जगह अभिशाप समझने लगे। इतना ही नहीं, लोगों का कहना है कि उन्होंने देवी से अपना वरदान वापस लेने की प्रार्थना की तो देवी ने सारी चांदी को नमक में बदल दिया। यहां एक मंदिर भी है जो शाकंभरी देवी को समर्पित है।

सांभर झील है बॉलीवुड की पसंद

राजस्थान की सांभर झील पर्यटकों के साथ-साथ बॉलीवुड इंडस्ट्री के लोगों को भी खूब पसंद आ रही है। फिल्म निर्देशक राजकुमार हिरानी की सुपर हिट फिल्म पीके के कुछ सीन यहां फिल्माए गए थे। कहा जाता है कि फिल्म पीके में आमिर खान का नग्न पोस्टर वाला सीन इसी झील के पास के ही एक रेलवे ट्रैक पर फिल्माया गया था। इसके अलावा राकेश ओमप्रकाश की दिल्ली 6, संजयलीला भंसाली की रामलीला और संजय दत्त पर फिल्माई गई फिल्म शेर जैसी अन्य फिल्में भी इसी जगह फिल्माई गई थी। झील के पास की जमीन का एक बड़ा हिस्सा सूखा है। इस हिस्से का फायदा फिल्म निर्माताओं को होता है, क्योंकि वो यहां अपनी फिल्म के लड़ाई के सीन शूट कर सकते हैं। शाकंभरी माता मंदिर के पास खुले मैदान में जोधा अकबर, द्रोण और वीर जैसी कई बॉलीवुड की फिल्मों के लड़ाई वाले सीन शूट किए हैं। इसके अलावा फिल्म रामलीला के भी कुछ सीन देवयानी मंदिर के पास फिल्माए गए थे।

ऊंट मेला: राजस्थान के बीकानेर में आयोजित होने वाला ऊंट मेला हर साल रेगिस्तान के जहाज माने जाने वाले, ऊंट के सम्मान में लगता है। इस मेले में ऊंटों को किसी दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके अलावा सभी ऊंटों के बीच दौड़ लगवाई जाती है। लोगों के मनोरंजन के लिए मेले में राजस्थानी गीत भी चलाए जाते हैं। मेले के अंत में आतिशबाजियों से पूरे आसमान को रोशन किया जाता है। बीकानेर में आयोजित होने वाला ये ऊंट मेला हर साल जनवरी में आयोजित किया जाता है।

पुष्कर मेला: पुष्कर मेला जो हर साल आयोजित किया जाता है और जिसमें तीन लाख से भी ज्यादा लोग और लगभग बीस हजार ऊंट, घोड़े, हाथ से बनी तरह-तरह की चीजे और घर सजाने की बहुत सी चीजों से भरी दुकानें देखने को मिलती हैं। पुष्कर मेला हर साल नवंबर के महीने में पुष्कर में लगता है।

सांभर झील जाने का सही समय

सांभर झील जाने के लिए अक्टूबर से मार्च तक के महीने सबसे बढ़िया हैं, क्योंकि सांभर राजस्थान में है और राजस्थान एक गर्म वातावरण वाला राज्य है, इसलिए मई, जून का समय यहां घूमने के लिए बिल्कुल सही नहीं है। इसके अलावा, जुलाई से सितंबर में भी जाने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि ये मानसून का मौसम होता है और बरसात में आपको नमक की खेती देखने को नहीं मिलेगी।

कैसे पहुंचे सांभर झील ?

सांभर झील जयपुर से करीब 80 किमी दूर है। जयपुर से सांभर बस के जरिए आसानी से पहुंचा जा सकता है।

राजस्थानी परिधान

जहां बात सभ्यता और सुंदरता को एक ही साथ जोड़ने की हो तो राजस्थानी कपड़ों के आगे कुछ नहीं टिकता। महिलाओं के लिए पारंपरिक राजस्थानी कपड़े काफी सभ्य, सुंदर और आरामदायक होते हैं। यहां की महिलाएं पारंपरिक घाघरा, चोली और ओढ़नी (दुपट्टा) पहनती है। महिलाओं के ये कपड़े चटक रंग के होते हैं, जिनमें गोटा (बॉर्डर) लगा होता है। अपने से बड़ों के सामने और बाहरी लोगों के आगे महिलाएं घूंघट निकाल कर रखती हैं। इस तरह से वो उस व्यक्ति को सम्मान देती हैं।

तो वहीं पुरुष धोती कुर्ता या कुर्ता पजामा पहनना पसंद करते हैं। इसके अलावा कुछ पुरुष सिर पर बंधेज के प्रिंट वाली सूती कपड़े की पगड़ी भी पहनते हैं। उनके लिए पगड़ी का उपयोग सिर्फ सिर ढकने वाली एक टोपी की तरह नहीं होती, बल्कि इज्जत होती है।

राजस्थानी आभूषण

कपड़ों के बाद अब बात करते हैं राजस्थानी आभूषणों की जो न सिर्फ राजस्थान में बल्कि अब पूरे विश्व में मशहूर हो रहे हैं। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि आभूषण केवल महिलाएं ही पहनती हैं। राजस्थान में आपको बहुत से ऐसे लोगों के गले में सोने की चेन, हाथ में पुरुषों वाली भारी सी चूड़ी और एक कान में सोने की बाली या लौंग देखने को मिल जाएंगे।

इधर महिलाओं के आभूषण लोक प्रसिद्ध है। राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध और महिलाओं द्वारा सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला आभूषण है, बोरला। बोरला एक प्रकार का मांग टीका होता है, जो दिखने में किसी लट्टू जैसा दिखता है। ये राजस्थान के पारंपरिक आभूषणों में से एक है। इसके अलावा महिलाएं, कमर बंद, बाजू बंद और लाख और सीप के कंगन भी पहनती है।

राजस्थानी लोकनृत्य

जहां बात राजस्थानी नृत्य की आती है, सबसे पहले नाम आता है घूमर का। हां वही घूमर डांस जो एक फिल्म में भी किया गया था, लेकिन हकीकत में घूमर डांस इससे काफी अलग होता है, जो ज्यादातर यहां कि महिलाएं ही निपुणता से कर पाती हैं। ये नृत्य देखने में भले ही आसान लगे, लेकिन इसे करने के लिए पैरों में बहुत ताकत चाहिए होती है।

इसके अलावा राजस्थान का दूसरा मशहूर लोक नृत्य है कालबेलिया डांस। पारंपरिक रूप से ये राजस्थान के बंजारनों द्वारा किया जाता है। कालबेलिया नृत्य आम लोगों द्वारा नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें लोगों के मनोरंजन के लिए कई खतरनाक करतब भी किए जाते हैं जैसे, कीलों पर खड़े होकर नाचना, आंखों से ब्लैड उठाना और एक उंगली पर थाल घुमाना। इन सब करतबों के लिए महीनों के अभ्यास की जरूरत होती है।

राजस्थान के पारंपरिक पकवान

खाने का शौकीन तो हर कोई होता है और अगर आपने राजस्थान आकर यहां का पारंपरिक खाना नहीं खाया तो ये बहुत अफसोस की बात होगी। राजस्थान का दाल, बाटी और चूरमा तो देश के कोने-कोने में मशहूर है। दाल के साथ घी में डूबी गर्मागर्म बाटी और मीठे के तौर पर घी वाला गर्मागर्म चूरमा, सोचकर ही मुंह में पानी आने लगता है। वैसे तो ये आपको आपके शहर में भी मिल जाएगा, लेकिन यकीनन यहां जैसी बात और कहीं नहीं होगी।

राजस्थान के मशहूर महोत्सव

त्योहार तो हर राज्य, हर शहर और हर धर्म के अच्छे होते हैं, लेकिन राजस्थान के कुछ मशहूर त्योहार, जैसे

डेजर्ट महोत्सव

जैसलमेर में होने वाला डेजर्ट महोत्सव जहां अतरंगी मुकाबले आयोजित किए जाते हैं। यहां पुरुषों के बीच मूंछों का मुकाबला होता है और ऊंटों के खेल दिखाए और खेले जाते हैं। ये महोत्सव फरवरी में आयोजित किया जाता है, जो देश में अपनी तरह का अनोखा और आकर्षित करने वाला महोत्सव है।

महाराष्ट्र की लोनार समेत भारत में मौजूद हैं नमक की यह 6 झीलें

यूं तो भारत की खूबसूरती शब्दों में बयान नहीं की जा सकती, क्योंकि ये अनंत है। इसका कोई तोल नहीं, तभी तो कहते हैं इसे, अतुल्य भारत। अलग-अलग धर्मों को मानने वाले इस धर्मनिरपेक्ष देश में आपको बहुत सी चीजों के बारे में जानकारी होगी। तो वहीं कुछ चीजों से अभी आप अंजान भी होंगे, जैसे भारत में नमक की झीलें। नमक की इन झीलों के बारे में आपने सुना बेशक होगा, किंतु शायद आपको इसकी विस्तार में जानकारी नहीं होगी।

भारत में नमक की झीलों की कुल संख्या 6 है। ये झीलें हैं - राजस्थान की सांभर झील, महाराष्ट्र की लोनार झील, ओडीशा की चिल्का झील, तमिलनाडु की पुलीकट झील, लद्दाख की पैंगोंग झील और राजस्थान की पचपदरा झील। इन सभी झीलों में नमक पाया जाता है और इसी कारण ये पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में बहुत सफल रहती हैं। नमक की इन झीलों के बारे में विस्तार से बहुत कम ही लोग जानते होंगे, तो चलिए हम आपको इन झीलों की खासियत से अवगत कराते हैं।

लोनार झील

लोनार झील, इसे लोनार क्रेटर भी कहते है। क्रेटर का अर्थ है, गड्ढा। अब आप सोच रहे होंगे कि एक झील, गड्ढा कैसे हो सकती है, तो आपको बता दें कि ऐसा कहा जाता है कि ये झील कोई प्राकृतिक तरीके से बनी झील नहीं, बल्कि सदियों पहले एक उल्का पिंड के गिरने से इसका निर्माण हुआ।

ये झील महाराष्ट्र के बुलढाणा जिला में स्थित है। लोनार झील महाराष्ट्र के लोनार शहर में स्थित है और ये समुद्र तल से 1,200 मीटर ऊंची सतह पर लगभग 100 मीटर के घेरे में फैली हुई है। लोनार झील में खारा पानी 5 से 8 मीटर तक भरा हुआ है।

साल 2006 में लोनार झील में एक बेहद अजीब और चौंका देने वाली बात हुई। साल 2006 में लोनार झील का सारा पानी भाप बनकर उड़ गया। किसी को समझ नहीं आया ऐसा होने के पीछे का कारण। इतना ही नहीं, गांव वालों का दावा था कि उन्होंने झील में पानी की जगह नमक और अन्य खनिजों को चमकते देखा था।

सांभर झील

राजस्थान की सांभर झील भी नमक की अद्भुत झीलों में से एक है। जयपुर से करीब 80 किमी दूर ये झील एक टूरिस्ट स्पॉट है। यहां हर रोज अलग-अलग जगहों से पर्यटक आते हैं। इस झील की खासियत सिर्फ ये नहीं कि ये महज एक नमक की झील है, बल्कि ये भारत की सबसे ज्यादा खारे पानी की झील है। इससे भी खास बात ये कि इस झील में नमक की मात्रा इतनी है कि नमक उत्पादन के लिए अब यहां परियोजना चलाई जा रही है। नमक उत्पादन की इस परियोजना का नाम है, 'सांभर नमक परियोजना।

चिल्का झील

ओड़िशा एक बहुत ही प्यारा राज्य है। इसकी सुंदरता छुपाए नहीं छुप सकती और इसी राज्य को और कीमती बनाती हुई चिल्का झील, जिसका पानी बाकी नमक की झीलों की तरह खारा है। इस झील के खारा होने का कारण है कि ये एक समुद्री झील है। चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी, और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी समुद्री झील है। यही बात इसे बाकी झीलों से अलग बनाती है और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। अजीब बात ये है कि दिसंबर से जून तक इस झील का पानी खारा रहता है, लेकिन मानसून में ये झील मीठे पानी से भर जाती है।

पुलिकट झील

पुलिकट झील, भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारी झील है। ये झील तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की बीच में स्थित है। दोनों राज्यों की सीमा पर स्थित होने के कारण ये झील, दक्षिण के आधे भाग को अपनी ओर आकर्षित करती है। पुलिटक झील में तीन नदियों का पानी आता है- अरनी नदी, कलंगी नदी और स्वर्णमुखी नदी। यूं तो इस झील में कई दुर्लभ प्रजाति वाले पक्षी, मछलियां, सांप, मगरमच्छ पाए जाते हैं, लेकिन ज्यादातर पर्यटक यहां साइबेरियन पक्षी- पेलिकन, ही देखने आते हैं।

पैंगोंग झील

क्या कभी आपका मन लद्दाख घूमने का किया है? किया ही होगा, आखिर इतनी खूबसूरत जगह पर कौन नहीं घूमना चाहेगा। पहाड़ों से घिरे लेह-लद्दाख में हर एक चीज देखने लायक है। खासकर पैंगोंग झील। जी हां, ये झील भारत की नमक की 6 झीलों में से एक है। पैंगोंग झील दुनिया की सबसे ऊंची, लंबी और गहरी झील मानी गई है। लद्दाख के पहाड़ों में घिरी इस झील का पानी खारा है। पर्यटकों के हिसाब से इस झील की सबसे दिलचस्प बात ये है कि इसके पानी का कोई निकास स्थान नहीं और इसी कारण किनारे पर नमक की पर्तें देखी जा सकती है।

पचपदरा झील

पचपदरा झील राजस्थान के बाड़मेर में पचपदरा नाम के एक गांव में स्थित है। इस झील का पानी भी खारा है, क्योंकि इसमें नमक की मात्रा ज्यादा है। इस झील में खारवाल जाति के लोग मोरली झाड़ी (एक प्रकार का पौधा) की टहनी के उपयोग से नमक के स्फटिक बनाते हैं। यही नहीं, लोगों की मान्यता है कि 400 साल पहले इस झील के आस-पास पड़ी दलदल को सुखाकर बस्तियों को बनाया गया। कहा था न अतुल्य भारत।

श्री बांके बिहारी भागवत प्रचार समिति जालंधर द्वारा भागवत कथा का आयोजन

■ जालंधर/नीरज

श्री बांके बिहारी भागवत प्रचार समिति जालंधर द्वारा परम श्रद्धेय आचार्य श्री गौरव कृष्ण गोस्वामी जी के अनुगत में 21 नवंबर से 27 नवंबर, सांय 4.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक भागवत कथा का आयोजन साईं दास स्कूल ग्राउंड , नजदीक पटेल चौक में किया जा रहा है। 20 नवंबर को कलश यात्रा दोपहर 3.00 बजे महालक्ष्मी मंदिर जेल रोड से हरिनाम संकीर्तन के साथ आरंभ होगी अथवा 101 महिलाएं कलश लेकर सबसे आगे चलेगी। आप सभी धर्म प्रेमियों से विनम्र निवेदन है कि सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधार कर भागवत कथा का श्रवण करें अथवा बांके बिहारी जी का आशीर्वाद प्राप्त करें। आए हुए सभी भक्तों का सुख-सुविधाओं का कमेटी की तरफ से विशेष ध्यान रखा जाएगा पार्किंग और जोड़ों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

किसी भी प्रकार की भागवत कथा से संबंधित जानकारी अथवा सेवाओं के लिए संस्था के प्रधान सुनील नैयर और श्री बांके बिहारी भागवत प्रचार समिति के किसी भी सदस्य से संपर्क किया जा सकता है। सुनील नैयर, बृजेश कुमार जुनेजा, उमेश ओरी, संजय सहगल, महेश मखीजा, संदीप मलिक, बृजमोहन चड्ढा, चंदन वडेरा, रिंकू मल्होत्रा, भूपेंद्र बिल्ला, राहुल बारी, नरेंद्र वर्मा, सुमित गोयल, बलविंदर शर्मा, अश्विनी कुमार आशू,
विकास ग्रोवर, हेमंत थापर, हातेंद्र तलवार, दविंदर अरोड़ा. राजकुमार शर्मा, मनीष गुप्ता, गोपी वर्मा, राजवंश मल्होत्रा, अरुण मल्होत्रा, तरुण सॉरीन, दविंदर वर्मा, विनोद खेरा, गौरव भल्ला।

जाति के आधार पर भर्ती का विज्ञापन निकालने वाले रेलवे विक्रेता पर कार्रवाई

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

आईआरसीटीसी ने भर्ती के इश्तेहार में जातिगत प्राथमिकता की बात करने वाले रेलवे के एक विक्रेता पर कार्रवाई की है। इस मामले को लेकर सोशल मीडिया पर आईआरसीटीसी की काफी खिंचाई हुई। बृंदावन फूड प्रोडक्ट्स ने अपने यहां ट्रेन कैटरिंग मैनेजर, बेस किचन मैनेजर और स्टोर मैनेजर के तीन पदों के लिए 100 पुरुष उम्मीदवारों से आवेदन मांगे थे। विज्ञापन में कहा गया था कि आवेदक 'अग्रवाल वैश्य समुदाय' से होना चाहिए और कम से कम 12वीं तक की शैक्षणिक योग्यता के साथ अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि से होना चाहिए। इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉर्पोरेशन (आई आर सीटीसी) ने कहा कि कंपनी ने आलोचनाओं के बाद विज्ञापन जारी करने वाले एचआर कर्मी को हटा दिया है। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''आईआरसीटीसी ने इसे गंभीरता से लिया है और ठेकेदार को जातिगत आधार पर नोटिस निकालने से मना किया है।

अनूठी पहल: बाबा नानक की पवित्र नगरी घूमने के लिए पहचान पत्र दिखाकर मुफ्त मिल रही साइकिल

पिछले आठ दिनों में 1500 से ज्यादा लोग साइकिल की सवारी का ले चुके हैं लुत्फ, सुल्तानपुर लोधी में स्थापित किए गए हैं चार साइकिल स्टैंड

■ चंडीगढ़/सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला)/न्यूज नेटवर्क

बाबा नानक की पवित्र धरती सुल्तानपुर लोधी में संगतों के लिए पंजाब सरकार के प्रयासों से एक अनूठी पहल की गई है। दूर-दराज से आने वाले लोग पवित्र धार्मिक स्थलों तक पहुंचने के लिए सुल्तानपुर लोधी में स्थापित किए गए चार साइकिल स्टेंडों से सिर्फ अपना पहचान पत्र दिखाकर दिनभर के लिए मुफ्त में साइकिल ले सकते हैं। दिनभर शहर का भ्रमण करने के बाद शाम को साइकिल स्टेंड पर वापिस जमा करवाना होगा। सुल्तानपुर लोधी में इस तरह के चार साइकिल स्टेंड स्थापित किए गए हैं। पहला साइकिल स्टेंड नगर काउंसिल दफ्तर के बाहर, दूसरा बस स्टेंड, तीसरा गुरुद्वारा श्री बेर साहिब और चौथा गुरुद्वारा श्री हट साहिब के नजदीक स्थापित किया गया है। विस्तृत जानकारी देते हुए हीरो कंपनी के सुपरवाइजर रिशब ने बताया कि प्रत्येक साइकिल स्टेंड पर संगत के लिए 25-25 साइकिल उपलब्ध हैं। यहां पर कोई भी व्यक्ति अपना पहचान पत्र दिखाकर साइकिल दिनभर के लिए ले सकता है।

संबंधित व्यक्ति का आईकार्ड हम जमा कर लेते हैं और साइकिल वापस देने पर आईकार्ड वापस दे दिया जाता है। उन्होंने कहा कि जो लोग पूरे शहर का चक्कर लगाना चाहते हैं और भीड़भाड़ के चलते अपनी कार इत्यादि नहीं ला सकते, उनमें साइकिल को लेकर काफी क्रेज है। उन्होंने बताया कि 31 अक्टूबर को ये साइकिल स्टेंड शुरू किया गया था, जिसमें अब तक 1500 से ज्यादा संगत साइकिल राइड का फायदा ले चुकी है। रोजाना 200 से ज्यादा संगत साइकिल राइड ले रही है। कुछ लोग आधे घंटे के लिए साइकिल ले जाते हैं तो कुछ दिनभर साइकिल अपने पास रखते हैं। उन्होंने बताया कि फिलहाल गुरुपर्व तक ये सेवा जारी रखी जाएगी, बाद में जरूरत पडने् पर इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। रिशब ने बताया कि इस सेवा को लेकर काफी क्रेज है और लोग बड़ी तादाद में हमारे साइकिल स्टेंड्स पर साइकिल के लिए पहुंच रहे हैं। साइकिल स्टेंड पर आए जालंधर के अवतार सिंह नगर के रहने वाले अमनप्रीत सिंह ने बताया कि वह गुरुघर में शीश नवाने आए थे लेकिन अब उन्होंने यहां स्थित सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब घूमने का मन बनाया है। इसलिए वह साइकिल लेकर सभी गुरुघरों तक जाना चाहते हैं, जिसके चलते उन्होंने साइकिल स्टेंड से अपना पहचान पत्र जमा करवाकर एक साइकिल ले लिया है।

कैप्टन अमरिन्दर सिंह सरकार द्वारा सिख महिलाओं को कीर्तन की सेवा निभाने की इजाज़त देने का प्रस्ताव सदन में पेश सभी पार्टियों द्वारा प्रस्ताव सर्वसम्मती से पास

श्री अकाल तख्त साहिब और शिरोमणि कमेटी को भेजा जाएगा प्रस्ताव

■ चंडीगढ़/न्यूज नेटवर्क

एक बड़े सुधारवादी कदम की तरफ बढ़ते हुए कैप्टन अमरिन्दर सिंह के नेतृत्व में पंजाब सरकार ने आज सदन में प्रस्ताव पेश करके श्री अकाल तख्त साहिब और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सचखंड श्री दरबार साहिब में सिख महिलाओं को कीर्तन की सेवा निभाने की इजाज़त देने की अपील की है। एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि यह प्रस्ताव औपचारिक तौर पर श्री अकाल तख्त साहिब और शिरोमणि कमेटी को भेजा जाएगा। इस प्रस्ताव को सभी पक्षों ने राजनैतिक हितों से ऊपर उठकर सर्वसम्मती से पास कर दिया। यह प्रस्ताव ग्रामीण विकास एवं पंचायत मंत्री तृप्त रजिन्दर सिंह बाजवा ने सदन में पेश किया जिसका उद्देश्य बाणी सिद्धांत विरोधी इस प्रथा को ख़त्म करना है जिसके साथ धार्मिक मामलों में पुरुष-स्त्री के आधार पर भेदभाव पैदा होता है। इस प्रस्ताव को स्पीकर ने वोटों के लिए सदन में रखा। प्रस्ताव पेश करते हुए श्री बाजवा ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समूचे जीवन के दौरान जात-पात/पुरुष-स्त्री के आधार पर भेदभाव का डटकर विरोध किया और अधिकारों और हकों के लोकतांत्रिक आधार पर समानता वाले समाज को प्रफुल्लित करने का संदेश दिया। अब तक सिख महिलाओं को कीर्तन की सेवा निभाने की आज्ञा न देने पर दुख ज़ाहिर करते हुए श्री बाजवा ने कहा कि सिख इतिहास में महिलाओं के साथ भेदभाव की कहीं भी कोई मिसाल नहीं मिलती। प्रस्ताव में कहा गया,''जगत बाबा नानक जी ने जात-पात, ऊच-नीच और पुरुष-स्त्री के भेदभाव से मुक्त एक कल्याणकारी समाज सृजन करने का सपना लिया था। इसी कारण ही गुरबानी और गुरू इतिहास में कहीं भी महिलाओं के साथ भेदभाव की कोई मिसाल नहीं मिलती। परन्तु यह बहुत ही दुख की बात है कि सिखी के सबसे बड़े केंद्र सचखंड श्री दरबार साहिब, अमृतसर में महिलाओं को कीर्तन करने की इजाज़त नहीं है। पंजाब विधानसभा का यह सदन श्री अकाल तख्त साहिब जी के जत्थेदार साहिब और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यह विनती करता है कि बाणी सिद्धांत विरोधी इस प्रथा को ख़त्म करके सिख महिलाओं को श्री दरबार साहिब, अमृतसर में कीर्तन करने की इजाज़त दे।'' इससे पहले विचार-विमर्श में हिस्सा लेते हुए आप के विधायक कुलतार सिंह संधवां ने सरकार द्वारा लाए प्रस्ताव पर सवाल उठाने पर अकाली नेताओं की आलोचना की। सदन में शिरोमणि अकाली दल ने पहले तो प्रस्ताव में इस्तेमाल की गई भाषा पर ऐतराज़ जताया परन्तु बाद में सरकार के प्रस्ताव का समर्थन कर दिया।

5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था पर बोले मोदी, हर राज्य और जिले को निभानी होगी महत्वपूर्ण भूमिका

■ धर्मशाला/न्यूज नेटवर्क

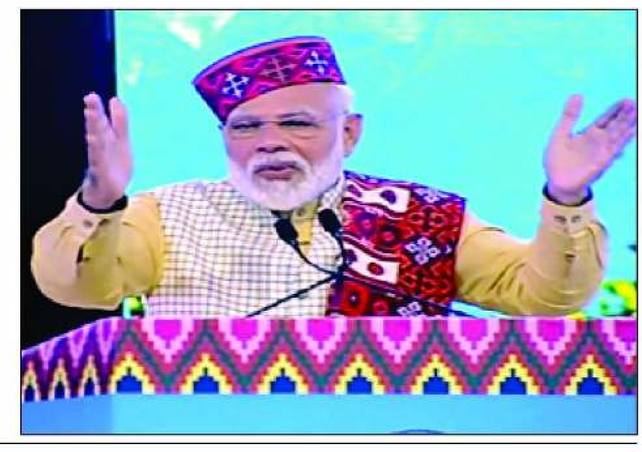

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 2025 तक भारत को पांच हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य हासिल करने में हर राज्य और जिले की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मोदी ने यहां दो दिन चलने वाले वैश्विक निवेशक सम्मेलन का उद्घाटन किया। इसका उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में निवेश आकर्षित करना है। उन्होंने कहा कि देश के हर राज्य और हर जिले में काफी क्षमता है और सभी मिलकर देश को 5,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। पहले की तुलना में, अब राज्य निवेश आकर्षित करने के लिए एक- दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। मोदी ने अपने 30 मिनट के भाषण में कहा कि हिमाचल में पर्यटन, फार्मा और अन्य क्षेत्रों में निवेश की काफी संभावनाएं हैं। कारोबार करने में सुगमता के मामले में भारत शीर्ष दस प्रदर्शन करने वाले देशों में है। वर्ष 2014 से 2019 के बीच भारत की कारोबारी सुगमता रैंकिंग में 79 अंक का सुधार हुआ है।

सुल्तानपुर लोधी में संगत की सेहत का ध्यान रखने के लिए मेडीकल लाउंज स्थापित, 7800 से ज्यादा लोगों को जांच के बाद दी दवाईयां

■ चंडीगढ़/सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला)/न्यूज नेटवर्क

पूरे शहर में 1 हजार से ज्यादा पैरा-मेडीकल स्टाफ और डॉक्टर्स की टीम 24 घंटे कर रही है संगतों की सेवा

श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में पवित्र नगरी सुल्तानपुर लोधी में आने वाली संगतों की सेहत का ध्यान रखने और सेवा के लिए सरकार की तरफ से जगह-जगह मेडीकल लाउंज स्थापित किए गए हैं। ये मेडीकल लाउंज 24 घंटे लोगों की सेवा में जुटे हुए हैं। तबीयत खराब होने की स्थिति में लोग यहां पहुंचकर विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाएं ले रहे हैं। मुख्य पंडाल के नजदीक स्थित मेडीकल लाउंज समेत सभी तीनों मेडीकल लाउंज में 7800 से ज्यादा लोगों को जांच के बाद निशुल्क दवाईयां दी गई हैं। इन मेडीकल लाउंज में कुल 7852 लोग अब तक इलाज करवा चुके हैं। सिविल सर्जन डॉ. जसमीत कौर ने बताया कि पूरे शहर में बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए कुल 1 हजार पेरा-मेडीकल

स्टाफ और डॉक्टर्स की टीमें दिन रात काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि मेडीकल लाउंज में ज्यादातर बुखार, पेट दर्द, बीपी, शूगर, खांसी और गले में खराबी की समस्या समस्याओं से संबंधित मरीज पहुंच रहे हैं। इन मरीजों को तत्काल जांच के बाद मुफ्त दवाईयां दी जा रही हैं। अब तक मुख्य पंडाल के नजदीक स्थित मेडीकल लाउंज से 6 हजार के करीब लोग मेडीकल सहायता प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के निर्देश के तहत संगतों की सेवा के लिए दिनरात हमारी टीमें काम कर रही हैं और लोगों को बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया करवाने के लिए सेहत विभाग पूरी तरह से वचनबद्ध है। कई तरह के विशेषज्ञ डॉक्टर्स की तैनाती इन मेडीकल लाउंज में की गई है। सिविल सर्जन ने बताया कि मेडीकल लाउंज से कई मरीजों को प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल में भी रेफर किया गया है। करीब 122 मरीजों को हालत खराब होने की वजह से उपचार के लिए दाखिल किया गया, जिसमें से 34 को दूसरे अस्पतालों में रैफर किया गया। पहले मेडीकल लाउंज में 5293 मरीजों, दूसरे में 1559 और तीसरे लाउंज में 1 हजार मरीजों की जांच के बाद उन्हें दवाईयां दी जा चुकी हैं।

श्री गुरू नानक देव जी के 550वें जन्मदिवस पर

मरदाना

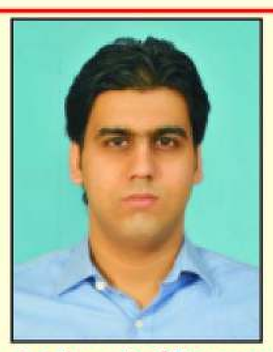

मरदाना जी कोई कथा सुनाओ,
गुरू नानक जी की बात सुनाओ।
कभी मारूथलों में, कभी पहाड़ों प,
देते कैसे मानवता का संदेश सुनाओ।
आप भी फिरते भूख के मारे,
कैसे पानी के लिए तरसे वह भी सुनाओ।
कंद मूल खा कर तुमने करे गुजारे,
हंकारी बली कंधारी की बात सुनाओ।
हंकारियों के हंकार को कैसा तोड़ा,
मलक भागो की दास्तान सुनाओ।
आखिर बोले मरदाना जी,
आओ मैं सब को हर बात सुनाऊ।
पैर दिखाते जब बाबा नानक,
जमी आसमां सब खुश हो जाए।
पहाड़ों पर जाकर सिधो से गोशटी रचाएं,
प्यार से उनकी अकाल पुरख का संदेश समझाएं।
भूख जब हमें सताए जिस पेड़ को हाथ लगाए,
कड़वे रीठे शहद से भी मीठे हो जाएं।
कंधारी के हंकार को तोड़ा चश्मा वहीं चलाया,
फैंके पत्थर को पंजे से रोक लगाएं।
नाम जपो, वंड छको और किरत करो,
गुरू नानक जी सबको यह संदेश देते जाएं।
घर में मेरे चलकर आए है आज,
फकीरा सतगुरू नानक सबको है गले लगाएं।

गुरलीन कौर फकीरा
आरिया नगर,
करतापुर 98721-97326